Question — Trace the history of Hindu Kingdom Sri-vijay from the fourth to eight century A.D

प्राचीन काल में सुमात्रा में कई छोटे-बड़े राज्य थे जिनमें श्री विजय भी एक था। श्री विजय के प्रारंभिक इतिहास का वर्णन चीनी श्रोतों में मिलता है। चीनी साक्ष्यों में इसका काल ~~उल्लेख~~ 7 वीं शताब्दी माना गया है जबकि विद्वानों ने इसके विकास का काल चौथी शताब्दी ई० माना है। यदि फेरण्ड महोदय का मत स्वीकार किया जाय तो श्री विजय की स्थापना चतुर्थ शती में हुई थी परन्तु इसका इतिहास सातवीं शताब्दी के बाद ही प्राप्त है। संभवतः इससे पूर्व चीनी ग्रंथों में इसका कुछ और नाम रहा हो।

फेरण्ड के अनुसार रामायण और चीनी स्रोतों में श्री विजय का वर्णन आया है। रामायण में वर्णित यवद्वीप से इसकी तुलना की गयी, चीनी ग्रंथों में वर्णित ची-ये की समता 'जय' से अर्थात श्री विजय से तुलना किया गया है। कुछ विद्वानों के अनुसार सन-फो-त्सि जो पहले कन-टो-ली कहलाता था, श्री विजय ही है परन्तु यह धारणा सही नहीं है क्योंकि ये दोनों ही मलाया के क्षेत्र माने गये हैं। विद्वानों की धारणा है कि मलाया ही आगे चलकर, सुमात्रा में मिल गया है।

चीनी स्रोतों से ज्ञात होता है कि श्रीविजय की स्थापना से पूर्व ही सुमात्रा में हिन्दू राज्य स्थापित हो चुका था। यहाँ के कुछ स्थानों से प्राप्त मातृ की गुप्त एवं पल्लव शैली की मूर्तियाँ इस बात का संकेत करती हैं कि सुमात्रा में उत्तरी एवं दक्षिणी भारत के लोगों ने अपने अभिवेश स्थापित कर लिये थे।

सुमात्रा में श्रीविजय साम्राज्य की स्थापना यहाँ के छोटे छोटे राज्यों को सम्मिलित करके की गई होगी। सुमात्रा से चीन भेजे गये राजदूतों का वर्णन चीनी साहित्य में आया है, इसमें श्रीविजय के दो राज्यों का भी आया है जो सभ्यता में काफी बढ़ी होने पर भी अधिक दिनों तक स्वतंत्र नहीं रह सके। इन राज्यों का विध्वंस हुआ और इनके स्थान पर चे-ली-फो-चे की स्थापना हुई जो बाद में श्रीविजय कहलाया। इसका उल्लेख चार अभिलेखों में आया है।

दक्षिण भारतीय भाषा में उत्कीर्ण उक्त चारों अभिलेख के प्रथम लेख से श्रीविजय में महायान धर्म का पता चलता है। द्वितीय और चतुर्थ लेख एक ही विषय पर प्रकाश डालते हैं तृतीय लेख में कोई तिथि ही नहीं है। ये चारों लेख संभवतः एक ही राजा के काल में लिखा गया है। इन लेखों ~~के आधार~~ से श्रीविजय के

इतिहास पर भी प्रकाश डालता है। इससे ज्ञात होता है कि 680 ई० तक श्रीविजय का पूरी तरह विकास हो चुका था। श्रीविजय साम्राज्य में सुमात्रा, मलाया, बंग द्वीप, जावा तथा श्री विजय विघटित हो गये।

विद्वानों ने श्री विजय के विकास में उसकी भौगोलिक स्थिति को भी सहायक माना है। यहीं से होकर व्यापारिक जहाज चीन से भारत जाते थे, बीच में स्थित होने से इस ~~प्रकार~~ व्यापारिक दोनों देशों से हो गया, इस का उल्लेख इत्सिंग (इच चिङ) ने भी किया है जिसमें श्रीविजय की समृद्धि का भी ~~उल्लेख~~ वर्णन आया है जो एक प्रसिद्ध व्यापारिक और राजनीतिक केन्द्र था। यहाँ शैली और कोची बौद्धधर्म का प्रमुख केन्द्र था। कोची (Foche) एक सुरक्षित नगर था, जहाँ एक हजार से अधिक बौद्ध भिक्षु रहते थे, यहाँ सभी विषयों का गहन अध्ययन होता था।

प्रो० ~~सिडी~~ सिडी की धारणा है कि श्रीविजय का उदय शैलेन्द्र साम्राज्य के अन्त में हुआ। इस बात की पुष्टि लेमबेंग लेख से भी होती है कि लेमबंग में एक ऐसे राज्य का उदय हुआ जिसकी सीमा मलय तक थी और यह जावा पर विजय प्राप्त करने के प्रयास में था यह राज्य श्रीविजय था। इसके दूत मण्डल चीनी सम्राट के पास भेजे गये थे। 742

में यहाँ से चीन के लिए अंतिम दूत मण्डल भेजा गया।
इसके बाद श्रीविजय के इतिहास का पता नहीं चलता।
इसके बाद इसका इतिहास लिंगो, अभिलेख से पता
चलता है। इस लेख में राजा बलपुत्रदेव का वर्णन है
जिसने बौद्ध ~~देवालयों के लिए~~ मंदिरों का निर्माण कराया
था, इस क्षेत्र के समस्त राज्य उसके अधीन थे। अनेकों
चैत्यों और स्तूपों का निर्माण इसके समय में किया गया।
इसकी राज्य सीमा मलाया तक थी। नील कण्ठ शास्त्री
के अनुसार विजयेन्द्र राज की राज्य सीमा मलाया
की खाड़ी तक थी। शैलेन्द्रों का श्रीविजय से कोई
संबंध नहीं था, पर पड़ोसी देश के नाते दोनों में
मैत्री थी, मध्य जावा पर शैलेन्द्रों का तथा पश्चिम जावा
पर श्रीविजय का अधिकार था।

एक अन्य अभिलेख से ज्ञात होता है कि श्रीविजय
एवं शैलेन्द्र एक ही थे, अगर यह सही है तो स्पष्ट
हो जाता है आठवीं शताब्दी के अन्त में श्रीविजय पर
शैलेन्द्रों का शासन स्थापित हो गया और आगे चलकर
इसी राजवंश ने श्रीविजय का राज्य ग्रहण किया।

कुछ ऐसे भी विद्वान हैं जो श्रीविजय तथा
शैलेन्द्रों को एक नहीं मानते हैं। दोनों का संबंध भी
बता पाना संभव नहीं है। डॉ० चटर्जी इन दोनों के मध्य
संबंध दर्शाने के उद्देश्य से इस बात का उल्लेख करते

है कि एक ही पत्थर के एक ओर श्रीविजय और दूसरी ओर शैलेन्द्र शासकों का उल्लेख इनमें संबंध बताता है। इसमें समय का अन्तर भी मात्र तीन वर्षों का था, जो इस बात की पुष्टि करता है कि दोनों में गहरा संबंध रहा होगा। इस समय दोनों की शक्तियाँ चरम सीमा पर थी जिनका सुदूरपूर्व में बोलबाला था। अतः यह संभव है कि दोनों शक्तियों संयुक्त रूप से हिन्द चीन पर आक्रमण किया है। नौवीं शदी में कम्बुज पूर्ण रूपेण स्वतंत्र हो गया और ऐसा उल्लेख मिलता है कि एक कम्बुज शासक ने श्रीविजय पर अधिकार कर लिया और इसे अपनी राजधानी बनाया।

डॉ० चटर्जी के इस मत में सत्यता है पर एक ही फलक के दोनों ओर दो नरेशों के अभिलेख से उनका संबंध बताना उचित नहीं दिखता क्योंकि इतिहास में ऐसे उदाहरणों का अभाव नहीं है। जहाँ तक समय का सवाल है तो तीन वर्ष राजनीतिक सत्ता परिवर्तन के लिए कम समय नहीं है। संभव है इस बीच श्रीविजय के बाद शासन सत्ता शैलेन्द्रों के हाथ में आ गई हो।

उक्त विवरण से ज्ञात होता है कि आठवीं शताब्दी के अंत में श्रीविजय का पतन प्रारंभ हो गया था। इसकी सत्ता शैलेन्द्रों के हाथ में चली गयी, इनका प्रभुत्व

लगभग 11 वीं शताब्दी तक रहा। 11 वीं शदी में कैम्बे और मलयु स्वतंत्र हो गये। चन्द्रभानु नामक एक व्यक्ति ने मलाया में अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की। धीरे धीरे श्रीविजय के सभी स्वतंत्र राज्य अलग हो गये, कुछ ने अन्य शक्तिशाली राज्य में मिलकर सुरक्षा पा ली। किन्तु दक्षिण में इस राजवंश ने काफी ख्याति अर्जित की अतः श्रीविजय का इतिहास शैलेन्द्रों के विकास और अन्त का इतिहास माना जाता है।